

সামাজিক সিরিজ

১

নারী-নির্ঘাতন



শ্রীনগেন্দ্রনাথ দাস প্রণীত

বিনিময়—ছই পয়সা।

1911
1912
1913
1914
1915
1916
1917
1918
1919
1920
1921
1922
1923
1924
1925
1926
1927
1928
1929
1930
1931
1932
1933
1934
1935
1936
1937
1938
1939
1940
1941
1942
1943
1944
1945
1946
1947
1948
1949
1950
1951
1952
1953
1954
1955
1956
1957
1958
1959
1960
1961
1962
1963
1964
1965
1966
1967
1968
1969
1970
1971
1972
1973
1974
1975
1976
1977
1978
1979
1980
1981
1982
1983
1984
1985
1986
1987
1988
1989
1990
1991
1992
1993
1994
1995
1996
1997
1998
1999
2000
2001
2002
2003
2004
2005
2006
2007
2008
2009
2010
2011
2012
2013
2014
2015
2016
2017
2018
2019
2020
2021
2022
2023
2024
2025
2026
2027
2028
2029
2030
2031
2032
2033
2034
2035
2036
2037
2038
2039
2040
2041
2042
2043
2044
2045
2046
2047
2048
2049
2050
2051
2052
2053
2054
2055
2056
2057
2058
2059
2060
2061
2062
2063
2064
2065
2066
2067
2068
2069
2070
2071
2072
2073
2074
2075
2076
2077
2078
2079
2080
2081
2082
2083
2084
2085
2086
2087
2088
2089
2090
2091
2092
2093
2094
2095
2096
2097
2098
2099
2100

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100
101
102
103
104
105
106
107
108
109
110
111
112
113
114
115
116
117
118
119
120
121
122
123
124
125
126
127
128
129
130
131
132
133
134
135
136
137
138
139
140
141
142
143
144
145
146
147
148
149
150
151
152
153
154
155
156
157
158
159
160
161
162
163
164
165
166
167
168
169
170
171
172
173
174
175
176
177
178
179
180
181
182
183
184
185
186
187
188
189
190
191
192
193
194
195
196
197
198
199
200
201
202
203
204
205
206
207
208
209
210
211
212
213
214
215
216
217
218
219
220
221
222
223
224
225
226
227
228
229
230
231
232
233
234
235
236
237
238
239
240
241
242
243
244
245
246
247
248
249
250
251
252
253
254
255
256
257
258
259
260
261
262
263
264
265
266
267
268
269
270
271
272
273
274
275
276
277
278
279
280
281
282
283
284
285
286
287
288
289
290
291
292
293
294
295
296
297
298
299
300
301
302
303
304
305
306
307
308
309
310
311
312
313
314
315
316
317
318
319
320
321
322
323
324
325
326
327
328
329
330
331
332
333
334
335
336
337
338
339
340
341
342
343
344
345
346
347
348
349
350
351
352
353
354
355
356
357
358
359
360
361
362
363
364
365
366
367
368
369
370
371
372
373
374
375
376
377
378
379
380
381
382
383
384
385
386
387
388
389
390
391
392
393
394
395
396
397
398
399
400
401
402
403
404
405
406
407
408
409
410
411
412
413
414
415
416
417
418
419
420
421
422
423
424
425
426
427
428
429
430
431
432
433
434
435
436
437
438
439
440
441
442
443
444
445
446
447
448
449
450
451
452
453
454
455
456
457
458
459
460
461
462
463
464
465
466
467
468
469
470
471
472
473
474
475
476
477
478
479
480
481
482
483
484
485
486
487
488
489
490
491
492
493
494
495
496
497
498
499
500
501
502
503
504
505
506
507
508
509
510
511
512
513
514
515
516
517
518
519
520
521
522
523
524
525
526
527
528
529
530
531
532
533
534
535
536
537
538
539
540
541
542
543
544
545
546
547
548
549
550
551
552
553
554
555
556
557
558
559
560
561
562
563
564
565
566
567
568
569
570
571
572
573
574
575
576
577
578
579
580
581
582
583
584
585
586
587
588
589
590
591
592
593
594
595
596
597
598
599
600
601
602
603
604
605
606
607
608
609
610
611
612
613
614
615
616
617
618
619
620
621
622
623
624
625
626
627
628
629
630
631
632
633
634
635
636
637
638
639
640
641
642
643
644
645
646
647
648
649
650
651
652
653
654
655
656
657
658
659
660
661
662
663
664
665
666
667
668
669
670
671
672
673
674
675
676
677
678
679
680
681
682
683
684
685
686
687
688
689
690
691
692
693
694
695
696
697
698
699
700
701
702
703
704
705
706
707
708
709
710
711
712
713
714
715
716
717
718
719
720
721
722
723
724
725
726
727
728
729
730
731
732
733
734
735
736
737
738
739
740
741
742
743
744
745
746
747
748
749
750
751
752
753
754
755
756
757
758
759
760
761
762
763
764
765
766
767
768
769
770
771
772
773
774
775
776
777
778
779
780
781
782
783
784
785
786
787
788
789
790
791
792
793
794
795
796
797
798
799
800
801
802
803
804
805
806
807
808
809
810
811
812
813
814
815
816
817
818
819
820
821
822
823
824
825
826
827
828
829
830
831
832
833
834
835
836
837
838
839
840
841
842
843
844
845
846
847
848
849
850
851
852
853
854
855
856
857
858
859
860
861
862
863
864
865
866
867
868
869
870
871
872
873
874
875
876
877
878
879
880
881
882
883
884
885
886
887
888
889
890
891
892
893
894
895
896
897
898
899
900
901
902
903
904
905
906
907
908
909
910
911
912
913
914
915
916
917
918
919
920
921
922
923
924
925
926
927
928
929
930
931
932
933
934
935
936
937
938
939
940
941
942
943
944
945
946
947
948
949
950
951
952
953
954
955
956
957
958
959
960
961
962
963
964
965
966
967
968
969
970
971
972
973
974
975
976
977
978
979
980
981
982
983
984
985
986
987
988
989
990
991
992
993
994
995
996
997
998
999
1000

নারী-নির্ধ্যাতন

নারীর ওপর ভারতবাসীর কি অত্যাচার চলে,
কাশ্মীর দেশে কাণ্ড দেখে পাষণ্ড কেঁদে গলে ।
শিক্ষিত স্বামী প্রাজুয়েট হিতাহিত জ্ঞান শূন্য,
বনিতারে করে নিপীড়ন শুধু টাকা আদায়ের জন্য ।
বনিতা দেবেনা, ছাড়িবে না স্বামী উন্মাদ দাঁড়ালো রুখে,
কাশ্মীরী পণ্ডিত পাণ্ডিত্য দেখায় লাখি মারে স্ত্রীর বুকে ।
তবুও হয় না ক্রোধের শাস্তি নির্ধন কঠোর চিন্ত,
বনিতার চোখ তুলে নিয়ে বার উল্লাসে করে নৃত্য ।
কি ভয়ানক অত্যাচার কথা শুনিলে শিহরে অঙ্গ,
হায় অভাগিনী ভারতের নারী কাটায় পশুর মঙ্গ ।
শুধু কাশ্মীরে নয় সারা ভারতে এমনি কত অত্যাচার,
নিতা ঘটিছে শ্রবণে পশিছে অগণিত পাপাচার ।
সভ্যতার বড়াই করিছে ভারত বহুকাল হ'তে শুনি,
লজ্জায় মাথা নীচু করে তারা আছে যারা জ্ঞানী গুণী ।
লজ্জা আমবা চাপা দিয়ে যাই প্রতিকার করি কই,
নারীর ওপর প্রভুত্ব চালাতে বিবেক ভুলিয়া রই ।
তারই কলে এই ভারতের নারী অবলা দুর্বলা রয়,
প্রকৃতির পাশে দাঁড়িয়ে নিয়ত দুর্নীতি কত যে সয় !
নারী-নিগ্রহ এ ভারতবর্ষে চলিতেছে বহুদিন,
সমাজ আইনে কঠিন বন্ধনে হয়েছে মর্যাদাহীন ।

সমাজ-বিধানে নারীর ভাগ্য একবার হ'বে বিয়ে,
 পুরুষের বেলা যতবার ইচ্ছা প্রাণের পিপাসা নিয়ে।
 বনিতা মরিলে পুরুষের নৃত্য আবার বাজিবে ঢাক,
 আবার আসিবে নৃত্য গৃহিনী ছেলে নেয়ে থাকে থাক্।
 স্বামীটা মরিলে বিধবা নারীর কপাল পুড়িয়া যায়,
 জ্বলন্ত চিতায় মরা স্বামী বুকে বাঁপ দিতে বলা হয়।
 এ বাতংস দৃশ্য বিদেশী শাসকের করিল হৃদয় স্পর্শ,
 বন্ধ করে' দিয়ে জঘন্ত এ রীতি রক্ষা করে ভারতবর্ষ।
 নারীর ওপর শত অত্যাচার হিসাব কে তার করে,
 নারীরা শুধু খেলার পুতুল পুরুষের হাতের পরে।
 তাই গৃহকোণে পড়ে আছে তারা গায়ে নাই বিন্দু বল,
 অবাধে পুরুষ দিতেছে লাঞ্ছনা পিঁয়ে মারে নানা ছল।
 নারীর সম্মান করিছে হরণ গুণ্ডায় টানিছে কেশ,
 রক্ষিতে পারে না কাপুরুষ স্বামী নাহিক ছুঁথের লেশ।
 নারীর দাসত্ব যবে না ঘুচিবে না জাগিবে গায়ে বল,
 ভারতের আশা ভরসা ভুবিবে চিরতরে রসাতল।
 কাশ্মীর পণ্ডিতের নৃশংস কার্যে চৈতন্য হইল আজ,
 হাজার হাজার পণ্ডিত দাঁড়ালো ঘুচাতে নারীর লাজ।
 নারীর শক্তি জাগাতে কাশ্মীরে আইন হইবে পাশ,
 বিবাহ বিচ্ছেদ চলিবে যেখানে স্বামী হ'বে বদনাস্।
 এ আইন যদি পাকা হ'য়ে যায় ভেঙ্গে যাবে কত হাঁড়ি,
 পুরুষের ভয় করিবে না আর ভারতবর্ষের নারী।

(৩)

গ্রাজুয়েট স্বামীর নৃশংস কার্য

পত্নীর চক্ষু উৎপাটন

শ্রীনগর, ২রা জানুয়ারী

দ্রৌ নিকট হইতে টাকা আদায়ের জগ্ন জনৈক গ্রাজুয়েট
কাম্মীর পণ্ডিত তাহার দ্রৌর একটা চক্ষু একেবারে তুলিয়া
ফেলায়, কাম্মীর পণ্ডিতগণ একেবারে ক্ষেপিয়া উঠিয়াছেন।
প্রায় চারি হাজার কাম্মীর পণ্ডিত উক্ত পণ্ডিতের নৃশংসতার
প্রতিবাদে এক সভা করিয়াছিলেন। গত রবিবার এস ডি
বৃক সন্দের নেতৃত্বে এক শোভাযাত্রা বাহির হইয়া সমস্ত সহর
প্রদক্ষিণ করে। শোভাযাত্রার অগ্রে ব্যাণ্ডের বাজনা, পতাকা
এং সামাজিক কুপ্রথার প্রতীক স্বরূপ মূর্তিসমূহ এবং স্বেচ্ছা-
স্বকগণ ছিল। অত্যাচারী পণ্ডিতের নৃশংসতা প্রকাশক
স্ট্রীত শোভাযাত্রায় গীত হইতেছিল। প্রায় চারি হাজার সাধারণ
লোকও এই শোভাযাত্রায় যোগ দিয়াছিল। কাম্মীর পণ্ডিতগণ
দ্বির করিয়াছেন, তাঁহারা বিবাহ বিচ্ছেদ আইন পাশের ব্যবস্থা
করিবেন।

কর্তা ও গিন্নী

গিন্নী। ওগো শুনেছ ? ...

কর্তা। কি ?

গিন্নী। কাম্মীর এক গ্রাজুয়েট পণ্ডিত মশাই তাঁর দ্রৌর

চক্ষু তুলে নিয়েছে।

কর্তা। বেশ করেছে, আমিও তোমার চোখ তুলে নেব।

গিন্নী। কেন ?

কর্তা। তোমার বাবা বলেছিল, বিয়ের পরে আমাকে রাজা করে দেবে। এখন টাকা চাইলেই ছ'চার খানা খাজ খাওয়ায়ে বিদেয় করে।

গিন্নী। বেশত ! খাজাও খাচ্ছ—রাজাও হ'য়েছ। আমার প্রাণের রাজা কি হওনি ?”

কর্তা। দেখ, শুধু মিষ্টি কথায় চিঁড়ে ভেজে না। তোমার বাবা না দেয়, তুমি যেখান থেকে পার টাকা দাও। নইলে তোমার চোখ তুলে নেব।

গিন্নী। বটে ! আইন পাশ হ'বে শুনেছ ?

কর্তা। কি ?

গিন্নী। বিবাহ-বিচ্ছেদ।

কর্তা। তাতে তোমার কি ?

গিন্নী। তোমার অত্যাচার আর আমি সহিব না। এতকাল যে জালায়েছ, ঠিক প্রতিশোধ নেব।

কর্তা। কি তোমাকে জালায়েছি ?

গিন্নী। জালাওনি ! ওগো ভাত বাড়ে—ওগো পা নাজে—ওগো আদুল টানো—ওগো পা টেপো—ওগো হাড়-জালানো নয় ? কই, আমি তো বলিনে, ওগো আদুল না টিপে দাও—মাথার চুল টেনে দাও—পিঠে হুড়ু হুড়ু দাও—ভুঁড়িতে হাত বুলিয়ে দাও—

(৫)

কর্তা। এ সব কি হাড়-জ্বালানো ?

গিন্নী। নিশ্চয় ! 'রি-রি করে' জ্বলে। কবে যে আমাদের দেশে বিবাহ-বিচ্ছেদ আইন পাশ হবে, সকলের আগে তোমায় হাইভোর্স করবো।

কর্তা। তারপর কি করবে ?

গিন্নী। আবার একটা বিয়ে করবো।

কর্তা। এই বুঝি আমি তোমার প্রাণের রাজা ?

গিন্নী। আমি যেমন তোমার প্রাণের রাণী—আদর করে' হাশে, প্রাণের রাণী—বাবার কাছে টাকা চাইতে লজ্জা করে না ?

কর্তা। এই কাণমলা, আর যদি কখনও চাই। খাজা খেয়েই রাজা হয়ে থাকবো।

প্রাণের মিলন

(নাটিকা)

প্রথম অঙ্ক।

১ম দৃশ্য।

চেয়ার টেবিল সজ্জিত সাগরের পড়িবার ঘর।

—সাগর লিখিতেছে—

মায়াদেবীর প্রবেশ।

মায়া। হাঁরে সাগর! তোর কবিতা লেখা কি আর হের
হ'বে না? দিন রাত্রি ঐ আকাশের দিকে চেয়ে থাকিস্—
আহার নিত্রা সব ভুলে যাস্। কি ভাবিস্—কি লিখিস্—তার
কি শাস্তি পাস্?

সাগর। কি বলছ মা—শাস্তি? এত শাস্তি বৃষ্টি জগতে
আর কিছুতে নাই। বিশ্বস্রষ্টার অনন্ত সৌন্দর্য্য এই বসুন্ধরার
অণু পরমাণুতে মিশে আছে। রূপ, রস, গন্ধ, শব্দ, স্পর্শ যা
কিছু দর্শন শ্রবণ ও অনুভব করা যায়, তা হ'তে প্রাণের মধ্যে ক'
ভাবের তরঙ্গ খেলে যায়। সেই ভাব ভাবার কুটিয়ে তুলি।
জান না মা, তাতে কত আনন্দ! কত তৃপ্তি!

মায়া। ছাই আনন্দ! ছাই তৃপ্তি! একটু নড়িসনে—
চড়িসনে—দিন রাত অইখানে বসে' গালে হাত দিয়ে ভাবি।
তোর কি কোমরেও ব্যথা হয় না বাপ! তারপর, লেখাপর

ছোড়ে দিয়ে ঘরে বসে' রইলি। তা পেটের ভাবনা যখন নেই, তাকে ছাখ নেই। কিন্তু তোর বুড়ো মা যে তোকে সংসারী হার' জ্বিন বৌ নিয়ে আনোদ করে' মবুতে চায়, তা তো ভাবিনে! এত মেয়ে দেখলি, একটাও পছন্দ করলি নে। কিন্তু এবার—

মাগর। এবার কি মা! আবার সহক এসেছে নাকি ?

মায়া। এবার খুব ভাল মেয়ে! দেখলেই ভুলে যাবি।

মার কেন অমত করিসনে ?

মাগর। (সহাস্ত্রে) তোমার কথা শুনে হাসি পাচ্ছে। দেখলেই ভুলে যাব, আবার অমত করতে নিবেধ করছ। এখানেই যে খটকা লেগে গেল মা!

মায়া। না বাবা! মেয়ে খুব রূপসী। রোজ রোজ ফটকের ব্যান্ড্যানানিও আর সহ হয় না। তুই বিয়েটা করলে সব কথাট চুকে যায়।

মাগর। তাহ'লে যে এ পূণ্যভূমির গৌরব নষ্ট হ'বে। না! বুঝতে পারছ না, তুমি রত্নগর্ভা। যে রত্ন গর্ভে ধারণ করেছ, তার রূপায় এই বাড়ীখানা মহাতীর্থে পরিণত হয়েছে। তোমার এই ছেলেকার জন্ত যত মেয়ের বাবা এখানে আসে, বৃদ্ধি তীর্থক্ষেত্রেও তত লোক বাতায়াত করে না। আচ্ছা না! আমি ভাবি, আমাদের দেশে মেয়ে জাতটা কি ছারপোকাকার জিনের মত জন্মায়? ভাগাড়ে গরু পড়লে যেমন ঝাঁকো ঝাঁকো শকুনির পাল উড়ে এসে ঘাড়ে পাড়ে, একটা ছেলের

সন্ধান পেলে মেয়ের বাবাগুলো তেমনি ডানা তুলে উড়তে আরম্ভ করে।

মায়া। ছিঃ বাবা! অমন কথা বলতে নেই।

সাগর। না—নেই! খুব আছে। আমার কিন্তু একটা ভাবনা হয়েছে মা!

মায়া। কি বাবা!

সাগর। যে দেশে এত মেয়ে জন্মাচ্ছে, তারা যদি দলে ভাঙ্গি হ'য়ে 'রণং দেহি' বলে পুরুষের বিরুদ্ধে যুদ্ধ ঘোষণা করে, এদেশে পুরুষ তিষ্ঠতে পারবে না। মেয়েদেরই রাজ্য হ'বে এটা।

মায়া। পাগলের পাগলামি শোন। পুরুষের শক্তি বেশী—নারী পারবে কেন? তুই আর বকাসনে। যা বলি, তাই শোন।

সাগর। বল মা বল, শুনচি।

মায়া। (গুপ্তস্থান হইতে একখানি ফটো বাহির করিয়া) জাগ দেখি বাবা এই মেয়েটী। পরিষ্কার নাক, মুখ, চোখ—দিকি চেহারা (সাগরের হস্তে প্রদান)

সাগর। (ফটো দেখিয়া) মন্দ নয়। তবে ভগবান এর নাকটা দিতে ভুলে গেছেন।

মায়া। বলিস্ কিরে! অমন বাঁশীর মত নাক—

সাগর। তোমার যেমন চোখ! একেবারে চিঁড়ের নাক চাপটা তাও দেখ বাঁশী।

মায়া। (রাগতভাবে) দে বাবা ফটো দে—তোর বিয়ে
করতে হবে না।

(ফটো কাড়িয়া লইয়া প্রস্থান)

মাগর। (গবাক্ষ-পথে তাকাইয়া) জোর রুটি এল! মেঘ
হলুৎ—বিজ্যং চন্কাচ্ছে—বজ্রধ্বনি হচ্ছে। মুহূর্তনধ্যে এক
প্রলয় দীলা! বাঃ! বাঃ! কি সুন্দর!

(নেপথ্য হইতে পুরুষকণ্ঠ—‘মশায়! বাড়ীতে কে আছেন?’)

মাগর। (ব্যস্তভাবে উঠিয়া) কে আপনি—কি চাই?

(নেপথ্য হইতে পুরুষকণ্ঠ—একটু আশ্রয়—)

মাগর। দাঁড়ান্—দাঁড়ান্—

[বেগে প্রস্থান]

মায়াদেবীর পুনঃপ্রবেশ

মায়া। আবার কোন মেয়ের বাবা এল নাকি! ভজ্রলোকের
গলার আওয়াজ! আশ্রয় চাইলে। তবে রাস্তার লোকই
হবে। বাই—আড়ালে দাঁড়িয়ে দেখি।

[অন্তরালে গমন]

মর্কাদ সিক্ত ধনপতি ও মাণিককে সঙ্গে করিয়া মাগরের
পুনঃপ্রবেশ।

ধনপতি। আপনি বড় উপকার করলেন। নইলে
আমাদের দুর্দশার সীমা ছিল না।

মাগর। আপনি বড় লজ্জা দিচ্ছেন। গরীবের এই দুঃস্থ
কুটীরে পদার্পণ করে’ আমাকে ধম্ব করেছেন। এটা নিজের

বাড়ীর মতই মনে করবেন। তারপর, আপনারা কোথা থেকে আসছেন ?

ধনপতি। কলকাতা থেকে। আমার নেয়েটাকে নিয়ে ওর মাতৃশালায়ে মাদরপুরে যাচ্ছি। ট্রেনটা আনতে বিলম্ব করেছে—তা ছাড়া আপনাদের দেশে হাঁটা পথে বা গরুর গাড়ীতে আসা বাতীত অল্প উপায় নেই। দশ বারো মাইল পথ মেতে হবে, বোধ হয় অর্ধেকটা এসেছি। একে ত সফা উদ্ভীর্ণ হয়েছে, তার উপর এই ভয়ানক ছর্ষ্যোগে গাড়ীও অচল হয়ে পড়ল।

নাগর। আপনারা দয়া করে' আমার বাড়ীতে এসেছেন, ভাল কাজই করেছেন। নতুবা এ চন্দ্রপুৰ গ্রামে অল্প কোন বাড়ীতে উঠলে অবস্থা অন্যদর করতো না, তবে তারা দরিদ্র বিপন্ন হয়ে পড়তো। এখানে আপনি স্বচ্ছন্দে বিশ্রাম করুন—সনাদদের কোন রকম ক্রটি হবে না। আপনার দরয়ান, চাকর এমন কি, গাড়ারানের পর্য্যন্ত কোন অসুবিধা হবে না।

ধনপতি। এই আশ্রয়টী দিয়েছেন, এই যচ্ছেষ্ট! আবার সনাদর কি নশায় ?

নাগর। বলেন কি! ভঙ্গলোকের বাড়ী এসে অন্যাহার কাল কাটাবেন ? (নেপথ্যের দিকে তাকাইয়া) মা ! মা !

মায়াদেবীর পুনঃপ্রবেশ।

(মাণিককে দেখাটয়া) একে ভিতরে নিয়ে যাও, শুভ্রা কাপড়-চোপড় দাও—

ধনপতি। স্ট্রটকেসের মধ্যে আমাদের কাপড়-চোপড় আছে।

মাগর। বেশ! আমি স্ট্রটকেস এনে দিচ্ছি।

নায়া। (মাণিকের হস্তধারণ করিয়া) এস মা এস।

ধনপতি। বাও মা মাণিক! এঁরা নিতাসুই ছাড়বেন না দেখ্‌ছি।

[বাহিরের দিকে সাগর এবং অন্তরের দিকে মাণিককে নইরা মারাদেবীর প্রস্থান]

একটী স্ট্রটকেস হস্তে সাগরের পুনঃপ্রবেশ।

মাগর। (ধনপতির প্রতি) আপনিও পাশের ঘরে চলুন।

ধনপতি। চলুন।

মাগর। আমি আপনার সম্বন্ধে—আনাকে আপনি মশাহে বললে বড় লজ্জা হয়।

ধনপতি। বেশ—চল।

[অগ্রে সাগর এবং পশ্চাতে ধনপতির প্রস্থান]

ধীরে ধীরে সাগরের পুনঃপ্রবেশ।

মাগর। ভজলোকের নাম ধনপতি। এ ধনপতির নাম শুনেছি। সহরের একজন ধনবান জমিদার। এইটুকুখানি পথ গরুর গাড়ীতে এসে এত ক্লান্ত হয়ে পড়েছেন যে বিশ্রাম করতে করতে ঘুনিয়েই পড়েছেন। আর মাণিক রান্নাঘরে তার রান্নাকার্যে সাহায্য করছে। ঘরখানা যেন আলোয় আলো করে রেখেছে। এ কোন্ মাণিক? কল্পনায় যে ছবি এঁকে

বেথেছি, কিছু তার জীবন্ত প্রতিমা। তবে কি এ সাগরের
মাণিক ?

[চিহ্নিতভাবে উপবেশন]

ধীরে ধীরে মাণিক প্রবেশ করিয়া সাগরের অলক্ষ্যে তাহার
পশ্চাতে দাঁড়াইল।

মাণিক। গালে হাত দিয়ে কি ভাবছেন ?

সাগর। (চমকিতভাবে মাণিকের দিকে ফিরিয়া) কে—
মাণিক ?

মাণিক। (স্বগতঃ) এ কি ! বিছ্যাৎ চমকের মত আমার
শরীর শিউরে উঠলো কেন ? (প্রকাশ্যে) হ্যাঁ—আমি !

সাগর। (স্বগতঃ) আশ্চর্য্য ! এ যেন আমার জন্ম
জন্ম পরিচিত কর্তব্যর ! (প্রকাশ্যে) দাঁড়িয়ে কেন, বদ।

মাণিক। (চেয়ারে বসিয়া) রান্না প্রায় শেষ হ'য়ে এল।
ততক্ষণে আপনার সঙ্গে আলাপ করলে বোধ হয় বিরক্ত হ'বে
না ?

সাগর। (সহাস্তে) বিলক্ষণ !

মাণিক। গলাধাক্কা দেবেন নাতো ?

সাগর। না—না—তাকি—

মাণিক। (মুছ হাসিয়া) তাকি ভদ্রলোকে পারে !
কি বলেন ?

সাগর। তোমাকে শিক্ষিতা বলে' মনে হচ্ছে। কত
পর্দাস্থ পড়েছ ?

মাণিক । ম্যাট্রিক পাস করেছি ।

সাগর । বাঃ !

মাণিক । আপনি ?

সাগর । বি, এ ।

মাণিক । বাঃ—বাঃ—বাঃ !

সাগর । ওকি ! অমন থেকে থেকে বাঃ—বাঃ—বাঃ
বন্ধুর মানে ?

মাণিক । অর্থাৎ আমার তিনগুণ বাঃ ! (টেবিলের
ইপর একটা খাতার পাতা উল্টাইতে উল্টাইতে) এখানা
দেখি, একটা কবিতার খাতা । (মনে মনে একটা কবিতা
পাঠ করিয়া) বাঃ ! বেশ কবিতা ত ! তারপর, তলায়
সাগর লিখে ডায়স দেওয়া কেন মশায় ?

সাগর । আমার নাম সাগর ।

মাণিক । মাণিক আজ সাগরে এসে পড়েছে । কিন্তু
কত মাণিকের পক্ষে সাগরকে নিমন্ত্রণ করা কি সম্ভবপর ?

সাগর । (সহাস্থে) বেশত ! একটা অসম্ভব ব্যাপার
দৃষ্ট করে ফেল্বে। সাগর মাণিকের বাড়ীতে যাবেই যাবে ।

মাণিক । ভুল্বেন না—ঠিকানা দিচ্ছি । কল্কাতায়
আমাদের বাড়ীতে অবশ্য অবশ্য যাবেন—নিমন্ত্রণ করলাম ।

সাগর । নিশ্চয় যাব । সাগর কি কখনও মাণিক ভুলতে
পারে ?

মাণিক । (স্বপ্নতঃ) এ স্বপ্ন যেন সত্য হয় !

(পরেই অংশ সামাজিক সিরিজ ২নং পুস্তিকায় বাহির হইবে ।)

১ নং অনাথবাবু বাজার লেন, 'সরস্বতী প্রিন্টিং ওয়ার্কস'
হইতে শ্রীনগেন্দ্রনাথ দাস কর্তৃক মুদ্রিত ও প্রকাশিত ।

শিক্ষিত ভ্রাতা ভগিনীর জীবনের
রহস্যময় কাহিনী

ভাওয়ালের = ষড়যন্ত্র

ইহাতে আছে,—ভাওয়াল রাজবংশের ইতিহাস, নামলার
বিবরণ, সন্ন্যাসীর জীবনবন্দী, বাণী বিভাবতীর জেরা, সত্যেন-
কানার্জির জেরা, আশু ডাক্তারের সাক্ষ্য, বি. সি. চ্যাটার্জির
সওয়াল, আজি এবং সম্পূর্ণ রায়। তৎসহ উপহার 'বাণী সন্ন্যাসীর
লড়াই' সম্পূর্ণ সিরিজ। অনেকগুলি হার্বটোন চিত্রে সুশোভিত।
পৃথিবীর ইতিহাসে সর্বশ্রেষ্ঠ এই বিরাট নামলার কাহিনী ঘরে
ঘরে সংগ্রহ করিয়া রাখুন। বিলম্বে হতাশ হইবেন। প্রায়
হাজার পৃষ্ঠা, একখানি মহাভারতের মত পুস্তক—মূল্য ২৫০ টাকা

বাণী সন্ন্যাসীর লড়াই

(সিরিজ সম্পূর্ণ)

মূল্য ৫/০ আনা।

প্রকাশক—

এন. এন. দাস ব্রাদার্স

১নং অনাথ বাবু বাজার-লেন, কলিকাতা।

সকল পুস্তকালয়ে পাওয়া যায়।